بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 24.06.16 बैतुल फ़तूह लंदन।

रमज़ान में जब हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करें, उसकी निकटता हमें प्राप्त हो, अपनी दुआओं को हम क़बूल होता हुआ देखें तो इन बुराईयों से बचने की तथा अल्लाह तआला के आदेशानुसार कर्म करने का हमें अत्यधिक प्रयास करना चाहिए।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले ख़ुत्बः में इस बात का वर्णन हुआ था कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि दुआओं की क़बूलियत के लिए अल्लाह तआला पर व्यापक ईमान तथा उसे समस्त शक्तियों का स्वामी समझते हुए उससे मांगना और उसके आदेशों के अनुसार कार्य करना अनिवार्य है। अल्लाह तआला के क्या आदेश हैं, इसके लिए अल्लाह तआला ने हमें क़ुरआन-ए-करीम जैसी महान पुस्तक प्रदान की है जिसमें अल्लाह तआला के समस्त निर्देश, समस्त आदेश एंव मनाहियाँ विद्यमान हैं। अल्लाह तआला ने जब यह फ़रमाया कि فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ कि मेरे बन्दे मेरे आदेशों को स्वीकार करें, वे आदेश जो क़ुरआन-ए-करीम में विद्यमान हैं उन्हें स्वीकार करें, इसके फलस्वरूप अल्लाह तआला भी दुआएँ क़बूल करेगा तथा हिदायत भी मिलेगी।

क़ुरआन-ए-करीम में असंख्य निर्देश हैं जिनको करने अथवा न करने का अल्लाह तआला ने हमें आदेश दिया है। जिनकी हमें समय समय पर जुगाली करते रहना चाहिए, दोहराते रहना चाहिए। इस समय मैंने कुछ आदेशों को लिया है। सर्व प्रथम मूल आदेश जो हमें अपने सम्मुख रखना चाहिए और जो इंसान के जीवन का उद्देश्य भी है, वह अल्लाह तआला की इबादत करना है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَمَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ اِلَّا لِیَعۡبُدُوۡنِ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसका अनुवाद इस प्रकार फ़रमाया है कि मैंने जिन्न और इन्स को इस लिए पैदा किया है कि वे मेरी उपासना करें।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- इस विषय को मैं कई बार ब्यान कर चुका हूँ, बार बार इस ओर ध्यान दिलाता रहता हूँ परन्तु हममें से अनेक कुछ दिनों तक इसे याद रखते हैं फिर भूल जाते हैं। यहाँ तक कि मेरी जानकारी मैं भी है, मैंने देखा है कि कुछ वाक़िफ़ीन-ए-ज़िन्दगी बल्कि वे जिन्होंने दीन की शिक्षा भी प्राप्त की हुई है तथा विद्या के प्रसंग में इसके महत्व को भी समझते हैं, वे भी इस ओर ध्यान नहीं देते, जिस प्रकार ध्यान देना चाहिए। फिर जमाअत के ओहदेदार हैं, मीटिंगज़ में तो अपनी प्रतिभा प्रकट करने का प्रयास करते हैं, किसी का मामला पेश हो जाए तो उसे क़ुरआन और हदीस के द्वारा समझाते हैं परन्तु कुछ ऐसे हैं कि उनका स्वयं इस मूल शिक्षा पर वह ध्यान नहीं, जो होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं-

तुम इस बात को समझ लो कि तुम्हारे पैदा करने से ख़ुदा तआला का आश्य यह है कि तुम उसकी इबादत करो और उसके लिए बन जाओ। दुनया तुम्हारा लक्ष्य न हो। मैं इस लिए बार बार इस बात को बयान करता हूँ कि मेरी दृष्टि में यही एक बात है, जिसके लिए इंसान आया है और यही बात है जिससे वह दूर पड़ा हुआ है। आप अलैहिस्सलाम ने इस तथ्य को अधिक स्पष्ट किया है आगे कि दुनया को लक्ष्य बनाने से यह अभिप्रायः नहीं है कि तुम दुनया के काम न करो, निःसन्देह वे भी करो, परन्तु जो साधना करने का कर्त्तव्य है बल्कि जो मानव उत्पत्ति का उद्देश्य है, वह तुम्हारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल रमज़ान में साधारणतः इसके अनुसार काम हो ही रहे हैं। इस बात का पूरा प्रयास करना चाहिए कि केवल रमज़ान में ही नहीं कि रमज़ान में ही अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़ के अनुसार इबादतों पर ज़ोर

नहीं देना, यह प्रयास हो कि इस रमज़ान के प्रशिक्षण तथा परिश्रम ने हमने जो इबादतों की ओर ध्यान देने में प्रगति की है उसे हमने अब सदैव के लिए जीवन का अंग बनाना है, अपने नमूने क़ायम करने हैं। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फ़रमाते हैं-

''जब ख़ुदा तआला की इच्छा मानव रचना से केवल साधना है तो मोमिन की शान नहीं कि किसी अन्य चीज़ को उद्देश्य बना ले। मन को इच्छाओं का अधिकार तो है परन्तु इसमें असंतुलन उचित नहीं। मन इच्छाओं की पूर्ति भी इस कारण से उचित है ताकि वह पथभ्रष्ट होकर ही न रह जाए। तुम भी इन चीज़ों को इसी लिए काम में लाओ। इनके द्वारा काम इस कारण से लो कि ये तम्हें इबादत में सक्षम बनाए रक्खें, न इस कारण से कि वही तुम्हारा मूल उद्देश्य हों''

इच्छाओं की पूर्ति का हदीस में भी वर्णन आया है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे नफ़्स का भी तुम पर हक़ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि निःसन्देह यह हक़ है परन्तु इसमें संतुलन होना चाहिए। मन की उचित इच्छाएँ जो हैं उनको पूरा करो, क्यूँकि ये अधिकार जो अल्लाह तआला ने मानव प्रकृति में रक्खे हैं इस लिए इनकी पूर्ति तो प्रत्येक अवस्था में अनिवार्य है। इनको अपने लाभ एंव प्रयोग में लाओ अन्यथा कुछ बुरी चीज़े ऐसी हैं यदि उनको उपयोग में न लाया जावे, पूरा हक़ न अदा किया जाए नफ़्स का, तो कुछ संवेदन शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और यह उद्देश्य नहीं है मानव उत्पत्ति का, बल्कि इबादत के लक्ष्य के साथ ही इन चीज़ों का उपयोग अनिवार्य है। अल्लाह तआला की पैदा की हुई प्रतिभाओं तथा शक्तियों को प्रयोग में लाना आवश्यक है तथा उपयोग में न लाना, अल्लाह तआला की ना-शुक्री है। एक सहाबियः थीं, बुरा हाल था उनका। न तय्यार होती थीं, न कंघी करती थीं, किसी ने उनके विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि इस प्रकार रहती हैं। आपने बुला भेजा, उन्होंने कहा कि मैं किस के लिए तय्यार हूँ। मेरा पति तो दिन को भी इबादत करता है रात को भी इबादत करता है, तो आपने उसके पति को बुलाकर कहा कि तुम्हारी इच्छाओं का भी तुम पर अधिकार है, तुम्हारी पत्नि का भी तुम पर अधिकार है। अतः हर प्रकार के दायित्वों की पूर्ति होनी चाहिए। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि उचित अवसर पर उपयोग न करना भी हलाल को हराम बना देता है। फ़रमाया कि وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ से प्रदित है कि इंसान केवल इबादत के लिए पैदा किया गया है अतः इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जितनी चीज़ उसके लिए आवश्यक है यदि उससे अधिक लेता है तो चाहे वह चीज़ हलाल ही हो परन्तु अधिक होने के कारण उसके लिए हराम हो जाती है। प्रत्येक वस्तु का उचित उपयोग ठीक है परन्तु यदि आवश्यकता से अधिक उपयोग है तो वह हलाल भी हराम बन जाता है। फ़रमाया- जो मनुष्य रात दिन मन की इच्छाओं की पूर्ति में व्यस्त है वह इबादत का क्या हक़ अदा कर सकता है। मोमिन के लिए अनिवार्य है कि वह एक कड़वा जीवन व्यतीत करे परन्तु भोग विलास में व्यतीत करने के कारण तो वह उस जीवन का एक प्रतिशत अंश भी प्राप्त नहीं कर सकता।

अल्लाह तआला ने नमाज़ और इबादत के विषय को और भी अनेक स्थानों पर बयान फ़रमाया है। सूरः नूर में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि رِجَالٌ۔ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ۔ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿النور: ٣٧-٣٨﴾ अर्थात- ऐसे महान व्यक्तित्व जिन्हें न कोई व्यवसाय तथा न कोई क्रय विक्रय अल्लाह की स्तुति से अथवा नमाज़ के क़याम से अथवा ज़कात की अदायगी से ग़ाफ़िल करती है, वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल भय के कारण उलट पलट हो रहे होंगे और आँखें भी। यह प्रतिष्ठा सबसे बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा को मिली और वे अल्लाह तआला के प्यारे बने और अपने सहाबा के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें फ़रमाया है कि वे तुम्हारे लिए मार्ग दर्शक हैं, उनके पीछे चलो। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत की व्याख्या में फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति की चर्चा तज़किरतुल औलिया नामक पुस्तक में है कि एक व्यक्ति हज़ारों रुपयों के लेन देन में व्यस्त था एक अल्लाह के वली ने उसको देखा तथा कश्फ़ी दृष्टि उस पर डाली तो उसे ज्ञात हुआ कि उसका दिल इतने लेन देन के बावजूद अल्लाह तआला की याद से ग़ाफ़िल नहीं हुआ। आप फ़रमाते हैं कि ऐसे ही व्यक्तियों के विषय में ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि رِّجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللهِ कोई व्यापार और ख़रीदना बेचना उनको ग़ाफ़िल नहीं करता और इंसान का कमाल भी यही है कि दुनया के कारोबार में भी व्यस्तता रक्खे और ख़ुदा को भी न भूले। फ़रमाते हैं कि वह टट्टू किस काम का जो समय की आवश्यकतानुसार बोझ लादने पर बैठ जाता है और जब ख़ाली हो तो ख़ूब चलता है।

वह भिकारी जो सांसारिकता से घबराकर एक कोने में जा बैठता है तथा एक प्रकार की दुर्बलता दिखाता है। इस्लाम में सन्यास नहीं, हम कभी नहीं कहते कि महिलाओं और बाल बच्चों को छोड़ दो तथा दुनया के धन्धों को छोड़ दो। नहीं, अपितु सेवक को चाहिए कि वह अपनी सेवा के कर्त्तव्य पूरे करे तथा व्यापारी अपने व्यापार के धन्धों को पूरा करे परन्तु दीन को प्राथमिकता दे, यह शर्त है।

नमाज़ों की सुरक्षा के बारे में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ﴿۲۳۸﴾ ﴿البقرة: ۲۳۸﴾ अर्थात- अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करो विशेष रूप से बीच की नमाज़ की, और अल्लाह के समक्ष आज्ञापालन करते हुए खड़े हो जाओ। इस आयत में विशेष रूप से उन लोगों को नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया गया है जिनके लिए कोई भी नमाज़ किसी भी प्रकार से बोझ है। यदि फ़ज्र की नमाज़ में रात को देर तक जागने के कारण या सुस्ती के कारण शामिल होना कठिन है तो यह, ऐसे व्यक्ति के लिए बीच की नमाज़ है। यदि व्यापारी के लिए ज़ोहर और अस्र की नमाज़ पढ़ना कठिन है तो यह उसके लिए बीच की नमाज़ है।

फिर एक आदेश क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने संकल्पों को पूरा करने तथा उनकी पाबन्दी का दिया है। इसमें ख़ुदा तआला से किए हुए वादे भी हैं और बन्दों से किए हुए वादे भी। अल्लाह तआला के एहद, अल्लाह तआला के दीन के विषय में एहद हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का जो एहद है, दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने का जो हमने एहद किया है, इस्लाम की शिक्षानुसार कर्म करने का जो हमने एहद किया है, इन समस्त बातों की पाबन्दी का एहद है जो अल्लाह तआला के हक़ अदा करने की ओर ध्यान दिलाते हैं। बैअत की शर्तों में सब बातें शामिल हैं और बन्दों के हक़ अदा करने की ओर भी ध्यान दिलाती हैं, इस ओर हमें ध्यान देना चाहिए।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि- وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ﴿۹۱﴾ ﴿النحل: ۹۱﴾ और तुम अल्लाह तआला के एहद को पूरा करो, जब तुम एहद करो, और क़समों को उनको पक्का करने के बाद न तोड़ो जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर कफ़ील (अभिभावक,संरक्षक) बना चुके हो। निःसन्देह अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। अतः बड़ा स्पष्ट आदेश है कि तुम्हारे दो एहद हैं। एक अल्लाह तआला से किया हुआ एहद जो निःसन्देह इस्लाम की शिक्षानुसार चलने का एहद है और बैअत का एहद है। यह एहद है कि मैं इस्लाम में प्रवेश लेकर, मुसलमान कहलाकर अल्लाह तआला के समस्त आदेशों का पालन करुंगा और दूसरी बात यह बयान फ़रमाई कि तुम आपस में जो एहद और प्रतिज्ञाएँ करते हो, उनको भी पूरा करो।

अतः इस विषय को समझने की आवश्यकता है कि एक मोमिन ने अपने समस्त एहदों और अनुबन्धों को पूरा करना है। यदि इस बात की महत्ता और वास्तविकता को हम समझ लें तो हर प्रकार के झगड़ों और धोखों और आरोपों से हमारा समाज मुक्त हो सकता है। घरेलू बातों में भी जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं वे भी कभी पैदा न हों क्यूँकि वहाँ भी एहद तोड़े जा रहे होते हैं। आजकल मैंने देखा है भौतिक स्वार्थ के कारण हमारे भीतर भी प्रतिज्ञाओं को तोड़ने और धोखा देने तथा ज़बान की स्वीकृतियों को पूरा न करने की समस्याएँ बढ़ रही हैं और इस बातों के कारण न केवल यह कि जमाअत की बदनामी होती है बल्कि कई बार ऐसे लोगों का ईमान भी नष्ट हो जाता है। प्रतिज्ञाओं को इंसान जब तोड़ता है तो झूठ का सहारा लेता है और झूठ के बारे में अल्लाह तआला ने बड़ी भारी चेतावनी देकर इससे बचने का आदेश दिया है।

निःसन्देह याद रक्खो झूठ जैसी कोई मनहूस चीज़ नहीं। साधारणतः दुनयादार कहते हैं कि सच बोलने वाले पकड़े जाते हैं परन्तु मैं कैसे इस बात को मान लूँ? मुझ पर सात मुक़दमे हुए हैं और ख़ुदा तआला की कृपा से किसी एक में भी, एक शब्द भी, मुझे झूठ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कोई बताए कि किसी एक में भी ख़ुदा तआला ने मुझे हराया हो। अल्लाह तआला तो स्वयं सत्य का समर्थक एंव सहायक है, यह हो सकता है कि वह सच्चे को दंड दे? यथार्थ यह है कि सच बोलने से जो सज़ा पाते हैं तो वह सच के कारण नहीं होती, वह सज़ा उनकी कुछ अन्य गुप्त बुराईयों के कारण होती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- और मुत्तक़ियों की अल्लाह तआला ने एक निशानी यह बताई है कि وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ क्रोध को दबाने वाले हैं तथा लोगों को क्षमा करने वाले हैं। अफ़्व का अर्थ है कि अपने विरुद्ध किए गए अपराध को सम्पूर्ण रूप से भला कहकर किसी को क्षमा कर देना, यह अफ़्व है। अतः मुत्तक़ी वह है जो न केवल क्रोध को दबाने

वाला हो बल्कि क्षमा करने वाला भी हो और फिर क्षमा इस प्रकार करे कि जिसने भी मेरे विरुद्ध षडयन्त्र किया है उसको मैं भूल जाऊँ। इस बारे में स्पष्ट करते हुए कि क्रोध को दबाने के क्या लाभ हैं हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि याद रक्खो कि बुद्धि एंव आक्रोष में भयानक शत्रुता है, जब जोश एंव क्रोध आता है तो बुद्धि स्थापित नहीं रह सकती परन्तु जो संतोष करता है तथा सहन शीलता का नमूना दिखाता है उसको एक नूर दिया जाता है जिसके कारण उसकी बुद्धि एंव विचार शीलता की शक्तियों में एक नई रौशनी पैदा हो जाती है और फिर नूर से नूर पैदा होता है। क्रोध एंव आक्रोष की अवस्था में क्यूँकि दिल और मस्तिष्क अंधकारमय होते हैं इस लिए फिर अंधकार से अंधकार पैदा होता है।

फ़रमाया कि क्रोध और विवेक दोनों एकत्र नहीं हो सकते जो क्रोध में लिप्त होता है उसकी बुद्धि मोटी और समझ क्षीण होती है। फ़रमाया कि उसको कभी किसी मैदान में ग़ल्बः और सहायता नहीं दी जाती। क्रोध, आधा पागलपन है जब यह भड़कता है तो पूरा पागल हो सकता है। जो व्यक्ति अधिक क्रोधित होता है उससे विवेक का स्रोत छीन लिया जाता है यदि कोई विरोधी हो तो उसके साथ भी क्रोध पूर्ण होकर बात न करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- आवश्यक है कि इंसान कुधारणा एंव क्रोध से बहुत बचे। संदेह से बचने के लिए अल्लाह तआला ने हमें क़ुरआन-ए-करीम में भी आदेश दिया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ○

ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो संदेह करने से बचा करो निःसन्देह कुछ संदेह पाप होते हैं और जासूसी न किया करो और तुम में कोई किसी अन्य की चुगली न करे क्या तुम में से कोई यह पसन्द करता है कि अपने मृत भाई का मांस खाए? अतः तुम इससे बड़ी घृणा करते हो। और अल्लाह का तक़्वा धारण करो निःसन्देह अल्लाह बड़ी तौबा क़बूल करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस आयत में पहली चीज़ जिससे बचने का वर्णन है, वह संदेह है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि संदेह ऐसा रोग और ऐसी बुरी बला है जो इंसान को अंधा करके विनाश के अन्धे कुएँ में गिरा देता है। फिर फ़रमाया- ख़ूब याद रक्खो कि सारी बुराईयाँ और ख़राबियाँ संदेह के कारण पैदा होती हैं इस लिए अल्लाह तआला ने इससे बहुत मना फ़रमाया है। फ़रमाया कि इंसान संदेह से बहुत ही बचे। यदि किसी के विषय में कोई कुधारणा पैदा हो तो अधिकता के साथ इस्तिग़फ़ार करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया-फिर दूसरी बात जिससे अल्लाह तआला ने हमें रोका है इस आयत में, जिज्ञासा करना। जो बात कोई न बताना चाहता हो उसके बारे में अवश्य यह प्रयास करना कि मुझे ज्ञात हो जाए। यह बातें अनुचित हैं इनके द्वारा भी बुराईयाँ जन्म लेती हैं। फिर तीसरा आदेश यह है कि ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) न करो। ग़ीबत करना ऐसा ही है जैसे किसी ने अपने मृत भाई का मांस खा लिया और इससे तुम बड़ी घृणा करोगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः रमज़ान में जब हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करें, उसकी निकटता हमें प्राप्त हो, अपनी दुआओं को हम क़बूल होता हुआ देखें तो इन बुराईयों से बचने की तथा अल्लाह तआला के आदेशानुसार कर्म करने का हमें अत्यधिक प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे कि हम उसके समस्त आदेशों का निर्वाह करते हुए उसकी निकटता प्राप्त करने वाले हों और रमज़ान के बाद भी हममें ये नेकियाँ स्थापित रहें। अल्लाह तआला के वास्तविक बन्दे हम बनें और उसी का सम्पूर्ण आज्ञापालन करने वाले हम हों।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुकर्रम चौधरी ख़लीक़ अहमद साहब पुत्र मुकर्रम चौधरी बशीर अहमद साहब हलक़ा गुलज़ार हिजरी, ज़िला कराची, जिनको 49 वर्ष की आयु में अहमदियत के विरोधियों ने 20 जून 2016 को रात लगभग साढ़े नौ बजे उनके क्लीनिक में घुसकर फ़ायरिंग करके शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, की नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया तथा आपके सद्गुण बयान फ़रमाए।